



e-ISSN: 2319-8753 | p-ISSN: 2347-6710

# IJRSET

International Journal of Innovative Research in  
**SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY**



# INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIVE RESEARCH

IN SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

Volume 13, Issue 4, April 2024

**ISSN** INTERNATIONAL  
STANDARD  
SERIAL  
NUMBER  
INDIA

Impact Factor: 8.423

9940 572 462

6381 907 438

[ijirset@gmail.com](mailto:ijirset@gmail.com)

[www.ijirset.com](http://www.ijirset.com)

## निर्मल वर्मा के उपन्यासों में यथार्थ चिंतन का बोध

राजेन्द्र कुमार

सहायक आचार्य, हिंदी साहित्य  
राजकीय महाविद्यालय, मकराना

### सारांश

हर रचना रचनाकार का अपने परिवेश के साथ के सार्थक संवाद का परिणाम है। इसी संवाद के तहत रचना की जीवन्तता बनी रहती है और वह समग्र रूप में जीवन की व्याख्या बन जाती है। इसलिए हर रचना की तह में कोई न कोई जीवनदृष्टि अवश्य विद्यमान रहती है एवं किसी रचना के अध्ययन का मतलब एक जीवनदृष्टि का अध्ययन है। साहित्यिक शोध का उद्देश्य भी यह पहचानने का परिश्रम होना चाहिए कि किसी रचनाकार की संपूर्ण रचना में या किसी समय विशेष की रचना में जीवन को किस प्रकार अभिव्यक्त किया गया है। यह एक प्रकार से बिताए गए जीवन को पुनः जीना है साथ ही उसकी जीवन्तता एवं विशेषता को पकड़ पाना भी। क्योंकि जीवन निरन्तर बदलता ही रहता है और उसके साथ जीवन यथार्थ भी। इसलिए हर युग के साहित्य के विश्लेषण या विवेचन की अपनी प्रासंगिकता अवश्य रहती है। हिन्दी साहित्य जगत में स्वाधीनता परवर्ती परिस्थिति की अलग भूमिका है। क्योंकि उसने तमाम जीवन दृष्टि को तथा तत्कालीन साहित्यिक मान्यताओं को आमूल बदल दिया। इसलिए बीसवीं शताब्दि के उत्तरार्द्ध की साहित्यिक मान्यताओं एवं प्रवृत्तियों को निर्धारित करने में स्वाधीनता परवर्ती भारतीय परिवेश की भूमिका निर्विवाद की है। इसने पूर्ववर्ती साहित्यिक प्रवृत्तियों से भिन्न प्रवृत्तियों को जन्म दिया। यहाँ आधुनिक मनुष्य अपनी तमाम विसंगतियों को झेलते हुए खड़ा है। यहीं से एक नितान्त भिन्न संवेदना की शुरुआत होती है। हिन्दी साहित्य की सभी विधाओं में इस नयी संवेदना की झलक अवश्य दिखायी देती है। उस समय की सृजनात्मक प्रतिभाओं ने इस नयी संवेदना को पूरी गहराई के साथ आत्मसात कर लिया है। अज्ञेय, मोहन राकेश, राजेन्द्र यादव, मन्नू भण्डारी, कमलेश्वर, उषा प्रियंवदा, निर्मल वर्मा जैसे प्रतिभाधनी रचनाकारों ने इसको प्रश्रय दिया। इन सभी लोगों ने साहित्य की लगभग सभी विधाओं में अपनी लेखनी चलायी है और उसे एक नयी दिशा देने की कोशिश भी की है। इनमें निर्मल वर्मा को छोड़कर अन्य लगभग सभी रचनाकारों की साहित्यिक देन पर काफी अध्ययन एवं अनुसन्धान हो चुके हैं। पर निर्मल वर्मा की साहित्य-साधना पर अनुसंधानपरक दृष्टि पर्याप्त मात्रा में नहीं पड़ी है। उनका रचना संसार बहुत विशाल है। उपन्यास, कहानी, निबन्ध, यात्रासंस्मरण, डायरी आदि लगभग सभी गद्य विधाओं पर उन्होंने अपनी लेखनी चलायी है। इसलिए उनका साहित्य अवश्य गहन अध्ययन की माँग रखनेवाला है। अतः प्रस्तुत शोध आलेख में निर्मल वर्मा के हिन्दी उपन्यास साहित्य में योगदान का विश्लेषणात्मक अध्ययन करने का प्रयास किया गया है, इस हेतु वर्मा के पाँच महत्वपूर्ण उपन्यासों को आधार बनाया गया है।

मूल शब्द : वे दिन, लाल टीन की छत, एक चिथड़ा सुख, रात का रिपोर्टर, अंतिम अरण्य

### निर्मल वर्मा का साहित्यिक परिचय :

निर्मल वर्मा का जन्म 3 अप्रैल सन् 1929 को शिमला में हुआ। उनका बचपन शिमला की पहाड़ियों में बीता। इसी कारण पहाड़ उनके अवचेतन में इस तरह बस गया है कि उनके संपूर्ण कृतित्व में पहाड़ी प्रतीक, पहाड़ी वातावरण और पहाड़ी सौन्दर्य प्रतिस्पन्दित है। निर्मल वर्मा आधुनिक युग के अद्वितीय लेखक हैं। उनके लेखन के पीछे गंभीर मनन चिंतन से ओतप्रोत सूक्ष्म रचना व्यक्तित्व है। उनकी पैनी रचनादृष्टि ही उनके लेखन को गंभीर बनाती है। मानव जीवन के यथार्थ को तलाशनेवाली है उनकी रचनाएँ। वे मानवीय संबन्धों के समर्थक है। जहाँ उन सम्बन्धों में विघटन होता है वहाँ एक अनजानी बेचेनी पैदा होती है। उस बेचेनी से मुक्त होने के लिए वे निरंतर अपने आसपास के लोगों से संबन्ध जोड़ने का प्रयत्न करते रहे हैं। इसलिए उनकी रचनाओं में संबन्धों के लिए संघर्षरत पात्र दिखायी देते हैं, कभी ऐसा जरूर होता है कि मैं किसी रेस्ट हाउस, किसी ट्रेन में होता हूँ तो मेरा वास्ता सचमुच ऐसे दम्पतियों से पड जाता है कि जिनके साथ मिलकर मुझे महसूस होता है कि जो मेरी बौद्धिक और अमूर्त परेशानी थी, उसकी एक मूर्ति इन दोनों के रिश्तों, संकेतों, बातचीत के द्वारा उद्घाटित हो रही है। तब पहली बार अनुभव दबाव के उस मान पर पहुँचता है जब मुझे लगता है कि मैं इस तैयारी में हूँ कि अब इसकी कोई कथा बुनी जा सकती है। भले ही निर्मल वर्मा एक कथाकार के रूप में जाने जाते हैं तथापि वे एक सशक्त निबन्धकार भी है। उनके निबन्धों में साहित्य, कला, राजनीति, संस्कृति, समाज जैसे विषयों पर उनका प्रौढ चिंतन अभिव्यक्त हुए हैं। इस अध्याय में उनके इस चिंतनपरक रचनाओं का विश्लेषण किया गया है। पाँचवाँ अध्याय है— निर्मल वर्मा के यात्रावृत्त और डायरी व निर्मल वर्मा ने देश-विदेश की यात्रा बहुत की है। इसका प्रभाव उनके रचनत्मक व्यक्तित्व पर भी पड़ा है। हर यात्रा एक अनुभव है। डायरी व्यक्ति के अंतरंग क्षणों का खुलासा है। दोनों आत्मांश से भरपूर रचनाएँ हैं।

### प्रमुख उपन्यास :

उपन्यास के क्षेत्र में निर्मल वर्मा का सृजनात्मक व्यक्तित्व अधिक निखर उठा है। अब तक के उनके पाँच अतिमहत्वपूर्ण उपन्यास निम्नलिखित है। “वे दिन” (1964), “लाल टीन की छत” (1974), “एक चिथडा सुख” (1979), “रात का रिपोर्टर” (1889) और “अंतिम अरण्य” (2000)

### वे दिन (1964) –

निर्मल वर्मा का सर्वप्रथम एवं सर्वश्रेष्ठ उपन्यास है। “वे दिन” महायुद्धोत्तर पीढ़ी के संत्रास, घुटन, शून्यता, मूल्य हीनता, अकेलापन, मृत्यु का आतंक यूरोप के और संबन्धों की अर्थहीनता आदि को रेखांकित करनेवाला उपन्यास है “वे दिन” उपन्यास के शीर्षक से ही स्पष्ट है कि उसका संबन्ध अतीत की घटनाओं से है, पात्रों के अतीत से है। यहाँ पात्रों का यह अतीत सुखद स्मृतियों से संबद्ध नहीं है बल्कि युद्ध की अभिशप्त नियति से आक्रान्त है। उपन्यास की कथा भूमि प्राग है और उसका समय तीन दिनों में सिमटा हुआ है। आस्ट्रियन पति-परित्यक्ता युवती रायना अपने एकमात्र पुत्र को लेकर प्राग आती है। वहाँ तीन दिन रहती है। उपन्यास का कथानायक “मैं” एक भारतीय छात्र है। वह अवकाश के दिनों में विदेशी टूरिस्टों के लिए गाइड का काम करता है। वह तीन दिन रायना के साथ रहता है। वियना लौट जाने

के पहले एक रात वह “मैं” के साथ गुजारती है। “मैं” और रायना की कथा के समानान्तर टी. टी., फ्रांज और मारिया की कहानी भी चलती है। हर एक पात्र अपने परिवेश से कटा हुआ है। उपन्यास में निर्मल जी के जीवन का एक अंश भी जुड़ा हुआ है। अपने यूरोप प्रवास के दौरान निर्मल जी रोम गए थे। ये उनकी बेकारी के दिन थे, इसलिए पैसे की कमी थी। वे एक होटल में रह रहे थे। शाम को कॉफी पीने निकले तो इंग्लैंड की एक महिला से मुलाकात हुई। बातचीत के दौरान उस महिला ने बताया कि वे एक टूरिस्ट ऑफिस में काम कर रही हैं। एक टूरिस्ट गाइड के रूप में वे वहाँ आयी हैं। भारत आने पर रोम में मिली उस महिला को लेकर प्राग शहर के परिप्रेक्ष्य में एक कथा निर्मल जी के मन में रूपायित होने लगी, उसी का परिणाम है “वे दिन”। उपन्यास का सीधा संबन्ध न तो उस महिला से है और न ही रोसे। लेकिन इन सब ने मिलकर उसके लिए उपयुक्त रूपबन्ध तैयार किया है। वास्तव में इसका सीधा संबन्ध अपने जीवनानुभव से ही है। निर्मल के ही शब्दों में, “वे दिन” तीन-चार दिनों की कहानी है। जहाँ एक व्यक्तित्व दूसरे व्यक्तित्व से मिलता है। दोनों अपने अतीत को एक-दूसरे के साथ जीते हैं और फिर वे अलग हो जाते हैं। इस समूचे परिवेश में लेखक जो कुछ दिनों के अनुभवों से जीवन के बारे में सत्य प्राप्त करता है, वही उस उपन्यास की बात है। ज्योतिष जोशी के अनुसार – “वे दिन” में निःसन्देह युद्धोत्तर यूरोपीय मानवीय नियति की वह सूक्ष्म और पारदर्शी तस्वीर मिलती है जिससे तत्कालीन स्थितियों को न केवल समझने में मदद मिलती है बल्कि महसूस कर सकने की स्थितियाँ भी बनती है। इस प्रकार यह उपन्यास तत्कालीन सामाजिक यथार्थ से आतंकित मानव जीवन की भीषणता का सही दस्तावेज निकलता है।

### लाल टीन की छत (1974) –

निर्मल वर्मा का दूसरा उपन्यास है “लाल टीन की छत”। इस उपन्यास में काया नामक एक छोटी लडकी की कथा है जो किशोरावस्था और यौवन के बीच की वयः सन्धि में है। वह शिमला के एक पहाड़ी शहर में अपने छोटे भाई, माँ और नौकर मँगतू के साथ लाटीन की छतवाले मकान में रहती है। उसकी पडोसी है मिस जोसुआ। यह कथा उन दिनों की है जब सर्दियों में काया के बाबु जी काम के सिलसिले में दिल्ली गए हुए थे और उसकी माँ गर्भवती थी। इस स्थिति में काया अपने को बिलकुल अकेला पाती है और अपने चारों ओर एक अलग दुनिया बनाकर भ्रम, आतंक और रहस्य की अनेक अनुभूतियों से गुजरती है। इस उपन्यास के तीन खण्ड हैं— “एक साँस में”, “शहर से ऊपर” और “तसल्ली से परे”। यह उपन्यास भी निर्मल जी के जीवन से संबन्धित है। बचपन में वे भी काया की मनःस्थिति से गुजरे हैं।

निर्मल जी के परिवार की दिक्कत यह थी कि वह निरंतर उन्मूलित रहा। क्योंकि उनके पिता अंग्रेजों के जमाने में सरकारी अफसर थे। अतः उन्हें शिमला और दिल्ली में रहना पड़ता था। इसलिए उनका परिवार पूरी धार्मिक पीठिका से अलग हो गया, पिता के परिवार से भी और माँ के परिवार से भी। उन्मूलन का यही भाव “लाल टीन की छत” में भी आया है। उसी प्रकार शिमला में बहुत ऊँचाई पर एक काली मन्दिर था। देवी काली के प्रति उनकी बहन की गहरी आस्था थी। इसलिए हर शाम निर्मल उनके साथ वहाँ जाते थे। उस मंदिर का वातावरण बिल्कुल शान्त था।

उनकी बहन वहाँ बैठी रहती और वे छुपा-छुपाई का खेल खेला करते थे। बिल्कुल यही वातावरण हम “लाल टीन की छत” में भी देख सकते हैं। उसी प्रकार इसमें पहाडिम स्त्री का जो प्रसंग आता है वह भी निर्मल का अपना अनुभव है। वे कहते हैं, “लाल टीन की छत की पहाडिने स्त्री को उसके चाचा उसके गाँव से ले आए थे। वर्षों पहले शहर के लोग पहाड़ों पर आते थे और हजार दो हजार रुपये देकर औरतों को खरीदकर ले आते थे। वे औरतें उनकी मिस्ट्रेस की तरह रहती थीं। ऐसा मैंने अपने परिवार में भी कई लोगों के साथ देखा है। उन औरतों का जीवन उस परिवार के साथ संलग्न भी रहता था और उसके बाहर भी। उस परिवार में रहनेवाले बच्चों के लिए इस तरह की औरतें या इस तरह के व्यक्ति हमेशा एक अजीब कौतूहल और वेदना जगाते हैं।” १० पहाडिम स्त्री नथवाली औरत के रूप में आती है और चाचा का बेटा बीरू उससे नफरत करता है। इस प्रकार इस उपन्यास में भी निर्मल वर्मा ने अपने अनुभवों को ही अभिव्यक्ति दी है। लेकिन निजी अनुभव के परे अपने समय के जीवन यथार्थ को नए ढंग से नई संवेदना के साथ अभिव्यक्त करने का कार्य भी इस उपन्यास में हुआ है। अतः कुल मिलाकर यह उपन्यास उपन्यासों के पुराने तंत्र को तोड़ने की कोशिश है, आधुनिकता धारणा के स्तर पर न होकर संवेदना के स्तर पर है।

#### एक चिथड़ा सुख (1979) –

“एक चिथड़ा सुख” निर्मल वर्मा का तीसरा उपन्यास है। इस उपन्यास का केन्द्र दिल्ली है। उपन्यास की नायिका बिट्टी इलाहाबाद की है। वह स्वतंत्र जीवन बितानेवाली औरत है। वह डैरी के निर्देशन में नाटक करती है। इस उपन्यास के अन्य पात्र हैं इरा और नित्तीभाई। वे भी नाटक में काम करते हैं। इन सबके अलावा एक और पात्र है मुन्नू। वह उपन्यास में आदि से अन्त तक एक नरेटर के रूप में आता है। मुन्नू बिट्टी का कजिन है और प्रायः बीमार रहता है। इसलिए वह बिट्टी के साथ रहता है। मुन्नू अपने जीवन के हर अनुभव को एक डायरी में नोट करता जाता है। यह उपन्यास उसकी इस डायरी का ही क्रमबद्ध संस्करण है। इसमें लेखक ने मध्यवर्गीय युवापीढी के मन को परखने की कोशिश की है। निर्मल के ही शब्दों में, “समूचा उपन्यास एक ऐसे प्रश्न पर टिका हुआ है, जिसे हर संवेदनशील व्यक्ति कभी-न-कभी अपने से पूछता है। खासकर उच्चवर्ग से आनेवाले वे युवा लोग, जो विशेष सुविधाओं में जीते हैं। क्या इन सुविधाओं को भोगते हुए हम अपने समाज, अपने जीवन, स्वयं अपने आत्म के प्रति ईमानदार और सच्चे रह सकते हैं? उपन्यास के लगभग सब पात्र भीषण व्यक्तिगत अन्तर्द्वन्द्वों से गुजरकर प्रश्नों को सुलझाने का प्रयास करते हैं। मैं इस उपन्यास में जानबूझकर मध्यवर्ग के पढ़े-लिखे पात्रों को लिया था, जो थियेटर में अपने जीवन के ड्रामे को मंचित करते हैं। और उन सब सुविधात्मक समझौतों और आत्म-छलनाओं को भेदने का प्रयत्न करते हैं, जिन्होंने उनके अंदरूनी जीवन को इतना खोखला बना दिया है। मेरे विचार में यह वह बिंदु है, जहाँ प्रामाणिक यथार्थ खोजने में ही साहित्य अपनी सार्थक भूमिका संपन्न करता है, अप्रामाणिक, झूठे और आत्म-सम्मोहित विकल्पों की खोट को दर्शाता है। ऐसे उपन्यास हमें आत्म-मथन और आत्मालोचना की उत्पीडित प्रक्रिया में से गुजरने पर विवश करते। इस प्रकार इस उपन्यास में एक प्रकार से जिन्दगी के सुखों और दुःखों के अन्दरूनी रिश्तों एवं जादुओं को परखने के साथ साथ उसके द्वारा जीवन को परिभाषित करने का निरन्तर प्रयास भी है। “समग्रतः यह उपन्यास आधुनिकता की सर्वव्यापी धुंध

में सोते जा रहे, मनुष्य के बुनियादी सुख और उसकी मौलिक इच्छाओं- आकांक्षाओं के बारे में कुछ जरूरी सवाल उठाता है।

#### रात का रिपोर्टर (1989) –

“रात का रिपोर्टर” निर्मल वर्मा का चौथा उपन्यास है। इसमें रिशी की कथा है जो एक रिपोर्टर है। रिशी से ऊबकर उसकी पत्नी उमा पागल हो जाती है और वह अस्पताल में है। रिशी बिन्दु से प्रेम करता है। उपन्यास में राजनीतिक गतिविधियों में संलग्न अनूप भाई हैं। वह जेल में है। उनका दोस्त दयाल साहब है जिसके द्वारा आपातकालीन स्थिति को उजागर किया गया है। आपातकाल के समय लेखकों और रचनाओं पर जो पाबंदी लगायी गयी थी, उसका शिकार है रिशी। इसमें लेखक ने आपातकालीन स्थिति की अभिव्यक्ति के द्वारा मात्र राजनीतिक हलचल को ही अभिव्यक्त नहीं किया बल्कि समाज में और व्यक्ति में व्याप्त आतंक को भी अंकित किया है। आपातकाल एक ऐसी त्रासद घटना थी जिससे हमारे तमाम अधिकार छीन लिए गए थे। इस उपन्यास के पात्रों में बाह्य एवं आन्तरिक स्तर पर एक प्रकार का डर छाया हुआ है। बाह्य यथार्थ का आतंक व्यक्ति के भीतर को भी समान रूप से आतंकित कर देता अवश्य है, क्योंकि बाह्य और आन्तरिक का भेद ही व्यर्थ है, “निर्मल वर्मा ने “रात का रिपोर्टर” में यह दिखलाने का प्रयत्न किया है कि बाह्य और आन्तरिक जगत में कोई द्वित्व नहीं। दोनों एक दूसरे से छाया प्रतिछाया की भाँति हिलते मिलते रहते हैं, प्रभावित होते रहते हैं।

#### अंतिम अरण्य (2000) –

“अंतिम अरण्य” निर्मल वर्मा का पाँचवाँ उपन्यास है। उपन्यास का केन्द्रीय पात्र मेहरा साहब है जो अपने जीवन की तमाम अर्जित क्लान्तियों के साथ मृत्यु के हाशिए पर खड़े हैं। उनकी पत्नी दीवा का निधन हो चुका था। दीवा मेहरा साहब की दूसरी पत्नी थी। उपन्यास की और एक पात्रा है तिया जो मेहरा साहब की पहली पत्नी से जन्मी पुत्री है। माँ बाप के प्रेम से वंचित वह हमेशा अकेली रहती है। उपन्यास के आदि से अन्त तक दिखायी देनेवाला पात्र है “मैं” जो हमेशा मेहरा साहब के साथ रहता है और उनकी बातों को एक नोट बुक में नोट करता रहता है। इसके अन्य पात्र हैं निरंजन बाबू, अन्ना जी, नौकर ननकू, डॉ. सिंह आदि। इसके ज्यादातर पात्र अपने दीर्घकाल के कामकाजी जीवन से सेवानिवृत्त होकर हिमालय के पहाड़ी प्रदेश में आकर रहने वाले हैं। मृत्युबोध और आश्रयहीनता के कारण जो भयानक आकांक्षाएँ मानव मन में उत्पन्न हो जाती हैं उन्हीं का सच्चा चित्रण है इस उपन्यास में। मृत्यु की तरफ धीरे धीरे बढ़ते मेहरा साहब में हम यह विसंगत स्थिति देख सकते हैं, “यह सिर्फ मृत्यु के आख्यान तक सीमित नहीं हैं। किसी की मृत्यु उसके जीवन की सत्ता का कितना सच्चा और कितना जीवन्त दस्तावेज हो सकती है, इस सत्य का सूक्ष्म एवं संवेदनात्मक उद्घाटन भी है।

**उपसंहार :**

इस प्रकार हम पाते हैं कि साहित्य की ऐसी कोई विधा नहीं जिसमें निर्मल वर्मा का सान्निध्य न हुआ हो। वे दरअसल चिंतक तथा सृजनकार दोनों का मिला जुला रूप है। वे माँग पर नहीं लिखते। अपने जीवन में उन्होंने जो कुछ अनुभव किया, देशी-विदेशी जीवन क्रम में जिन सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, साहित्यिक विचारों और चिन्ताओं ने उन्हें प्रभावित किया उन्हीं को उन्होंने उपन्यास, कहानी, निबंध, यात्रा संस्मरण जैसी विभिन्न विधाओं में रूपांतरित किया है। सृजन की इस क्षमता ने उन्हें हिन्दी के वरिष्ठ लेखकों की पंक्ति में अग्रणी बना दिया। कहानी या उपन्यास लिखते समय वे अपने को उस समय से तथा आसपास के लोगों से जुड़ा हुआ पाते हैं। इससे उनके सृजनात्मक तथा वैयक्तिक जीवन में एक प्रकार की एकनिष्ठता दिखायी देती है। क्योंकि एक लेखक अपने तथा अपने समय के जीवन को कुरेदते हुए जीवन सत्य की तलाश में लगा रहता है। रचना में वह उस जीवन को पुनः जीवित कर लेता है, "जितना भी लेखन या सृजन है वह अपने जीवन में हुई मृत्युओं की श्रृंखलाओं को कविताओं या कहानियों के जीवित क्षण में रूपायित करने की कोशिश है।

**संदर्भ ग्रंथ :**

1. निर्मल वर्मा – दूसरी दुनिया
2. पूर्वग्रह मार्च अप्रैल 1999 अंक 47,
3. वागर्थ जुलाई 2001, 86
4. निर्मल वर्मा – मेरे साक्षात्कार
5. डॉ. प्रेमसिंह – निर्मल वर्मा सृजन और चिंतन
6. इन्द्रनाथ मदान – आधुनिकता और हिन्दी उपन्यास



INTERNATIONAL  
STANDARD  
SERIAL  
NUMBER  
INDIA



# INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIVE RESEARCH

IN SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

 9940 572 462  6381 907 438  [ijirset@gmail.com](mailto:ijirset@gmail.com)



[www.ijirset.com](http://www.ijirset.com)

Scan to save the contact details